English

setuu अध्याय 19

0

Soul Himanshu

Like You and 20K others like this.

हनुमान जी का राजा हरीश चन्द्र और मोक्ष यज्ञ के बारे में व्याख्यान

यजमान काल्जिता के लिए अर्पणं क्रिया पूर्ण करने के पश्चात् बाबा मातंग ने उसको प्रसाद क्रिया के लिए इशारा किया किन्तु वह किसी और ही दुनिया में खोई थी, इससे बिलकुल अनभिज्ञ कि उसके आस पास क्या हो रहा था | बाबा मातंग हनुमान जी की ओर तनावपूर्वक मुस्कुराए , काल्जिता की ओर चार लम्बे तेज कदम बढाये और अपना गर्म हाथ उसके माथे पर रखा | उसकी देह ऐसे हिली जैसे कि उस पर आसमान से बिजली गिर गई हो | उसने अपने पैरों पर खड़े होने का संघर्ष किया , जैसे तैसे हनुमान जी की ओर बढ़ी और घुटने टेककर अपना सिर प्रार्थनापूर्वक झुका लिया | उसने एक शब्द भी नहीं बोला लेकिन उसके चेहरे पर हाव भाव ऐसे मनुष्य के थे जो अपनी जान की गुहार लगा रहा हो |लेकिन उसकी जान को तो उस समय कोई ख़तरा नहीं था | वह मरण संसार में सबसे सुरक्षित स्थान पर बैठी थी – चिरंजीवी हनुमान जी के चरणों में |

फिर वह किस चीज की गुहार लगा रही थी ? शायद हनुमान जी को उसके विचारों का अंदाजा था | वे आराम से उसकी ओर मुस्कुरा रहे थे | उनकी मुस्कान की गर्माहट ने अंततः काल्जिता के गले की अड़चन को पिंघला दिया और शब्द फूट पड़े – "हे प्रभु , मैं – मैं मोक्ष की याचना करती हूँ | माया के इस जालिम जंजाल से मुक्ति | मुझसे सब कुछ ले लीजिये और मुझे मुक्ति दे दीजिये | मुझे अपनी देह से कोई लगाव नहीं है | हाँ , मैं अपनी देह को इसी समय , इसी जगह छोड़ सकती हूँ | अगर आप मुझे इस प्रसाद के योग्य पाते हैं तो मुझे मोक्ष दे दीजिये प्रभु … मुझे और कुछ नहीं सिर्फ मोक्ष चाहिए |"

"उसी के लिए तो मैं यहाँ हूँ | आपको मोक्ष प्राप्ति में सहायता के लिए … ब्रह्मज्ञान देकर …" हनुमान जी स्नेह से बोले |

काल्जिता तुरंत बोली – "मुझे ब्रह्मज्ञान नहीं चाहिए प्रभु | मुझे मोक्ष चाहिए | मोक्ष की तीव्र प्राप्ति के लिए कोई तो आसान और शीघ्रगामी मार्ग होगा मेरे जैसे …"

उसकी आवाज धीमी हो गई जैसे ही उसने बाबा मातंग को उसकी ओर त्योरी चढाते देखा |

हनुमान जी विनम्रता से बोले – "हाँ , मोक्ष का एक तीव्रगामी रास्ता है | उसका नाम है मोक्ष यज्ञ | लेकिन यह बात ध्यान रखो , एक आत्मा अपने जीवन में यह यज्ञ केवल एक बार कर सकती है | क्या पक्का तुम अपने इस विकल्प को भविष्य के लिए सुरक्षित न रखकर अभी क्षय करना चाहोगी?"

काल्जिता ने एक नजर बाबा की ओर देखा , और फिर अपना सिर हनुमान जी की ओर ऊँचा करके आत्मविश्वास से बोली – "हाँ प्रभु, मैं अपने इस विकल्प का प्रयोग अभी करना चाहूंगी | अगर मैं इस यज्ञ के लिए योग्य हूँ , तो कृपा यह यज्ञ अभी आयोजित किया जाए |"

हनुमान जी ने चेतावनी दी – "यह तुम्हारे सबसे बुरे सपने से भी भयावना होगा ; इतना दर्दनाक होगा जैसा दर्द तुमने आज तक अनुभव नहीं किया होगा | पर हाँ , यह तत्काल होगा – मोक्ष का तत्काल मार्ग है ये |"

काल्जिता के मन में शंकाए उबर गई | लेकिन मोक्ष के तत्काल प्राप्ति की संभावनाओं ने उन शंकाओं को ढक लिया | वह मजबूती से बोली – "प्रभु , मैं मोक्ष की तीव्र प्राप्ति के लिए कोई भी दर्द सहन कर सकती हूँ | माया के इस जालिम जंजाल में फंसे रहने से बुरा भला कौन सा दर्द होगा?"

हनुमान जी ने बाबा मातंग को मोक्ष यज्ञ की प्रक्रिया शुरू करने का संकेत किया | बाबा मातंग की आँखे नम थी – कारण या तो बाबा को मालुम था या सिर्फ हनुमान जी को |

हनुमान जी की आँखे बाबा मातंग की नम आँखों से पल भर के लिए मिली | हनुमान जी की वह छोटी सी निगाह बाबा की इतनी हिम्मत बढाने के लिए काफ़ी थी कि वे सिसकियाँ न भरने लगें |

"हे मातांगो, कुछ ही समय में हम मोक्ष यज्ञ के साक्षी बनने वाले हैं | " हनुमान जी ने घोषणा की – "जैसा मैंने आपको पहले ही बताया , एक आत्मा के पास इस यज्ञ का विकल्प एक जीवनकाल में केवल एक बार होता है | काल्जिता ने निर्धारित कर लिया है कि वह अपना यह विकल्प अभी क्षय करना चाहती है | मैं आपको यह भी सूचित करना चाहता हूँ कि यह यज्ञ अधुरा नहीं छोड़ा जा सकता | अगर काल्जिता की आत्मा उड़ान न भर पाई , तो यहाँ पर एक ऐसी आत्मा का होना आवश्यक है जो स्वेच्छा से मोक्ष की उड़ान भरकर इस यज्ञ को पूर्ण कर सके | बाबा मातंग ने इस कार्य के लिए स्वयं को चुना है |"

हनुमान जी ने ये शब्द इतनी उदासीनता से कहे कि उर्वा नामक एक नवयुवक मातंग के अलावा किसी को भी परिस्थिति की गंभीरता का भान नहीं था | काल्जिता की आत्मा के मोक्ष प्राप्ति के आसार नगण्य थे , अर्थात , बाबा मातंग इस नश्वर संसार को छोड़कर मोक्ष प्राप्ति करके यज्ञ को पूरा करने वाले थे | अब उर्वा को समझ आ रहा था कि बाबा की आँखे नम क्यों थी | वे अपने प्रियजनों को छोड़कर जाने वाले थे … वे मृत्यु को प्राप्त होने वाले थे …

"नहीं …" उर्वा अपने पैरों पर कूद पड़ा और चिल्लाया , इस बात से अनभिज्ञ की वो क्या कर रहा था , "यह नहीं हो सकता .. मैं ऐसा नहीं होने दूंगा … यह यज्ञ रोकना ही होगा |"

यद्यपि उसने अपने हृदय की भावनाओं को चिल्लाने में अपनी पूरी उर्जा लगा दी थी , उसे कोई नहीं सुन रहा था | उसे आभास हुआ कि वह एक प्रकार के दु:स्वपन में चला गया था – वह भागना चाहता था लेकिन उसके पैर जमीन पर चिपके हुए थे ; वह चिल्ला रहा था किन्तु उसकी आवाज स्वयं उसके कानों तक भी नहीं पहुँच रही थी |

मोक्ष यज्ञ शुरू हो गया था | उर्वा की तरह अन्य युवा मातंग भी यज्ञ से कुछ इस प्रकार रोधित कर दिए गए थे कि वे केवल देख सकते थे क्या हो रहा है , वे यज्ञ में भाग नहीं ले सकते थे | इन युवा मातंगो में वे मातंग थे जो 41 साल पहले या तो पैदा नहीं हुए थे , या बहुत छोटे थे जब हनुमान जी पिछली बार आये थे | वे यज्ञ में सम्मिलित होने के योग्य नहीं थे | काल्जिता यजमान होने के कारण एक अपवाद थी |

वह हनुमान जी से ठीक 12 कदम की दूरी पर अपना सिर श्रद्धा में झुकाए खड़ी थी |

"अपना सिर ऊँचा करो और मेरी आँखों में देखो ,काल्जिता |" हनुमान जी बोले जैसे की यज्ञ शुरू हुआ , "कुछ ही समय बाद दो विपरीत बल तुम्हे महसूस होंगे | एक बल तुम्हारी आत्मा को मेरी तरफ खींचेगा और दूसरा बल तुम्हारी आत्मा को तुम्हारी देह में कैद रखने की भरपूर कोशिश करेगा | एक बल तुम्हे काल-अस्तित्व के भ्रम से बाहर खींचेगा तो दूसरा बल उस भ्रम को सशक्त करके तुम्हे फंसाए रखने की कोशिश करेगा | एक बल तुम्हारी आत्मा को मोक्ष की उड़ान भरने में सहायता करेगा और दूसरा बल तुम्हे माया के पाश में और भी ज्यादा जकड़ने की कोशिश करेगा |"

“मैं – मैं समझ गई प्रभु |” अपने सिर को सीधा रखने और अपनी दृष्टि हनुमान जी की आँखों में टिकाये रखने की कोशिश करते हुए काल्जिता हकलाई – हनुमान जी की वे दो कथ्थई आँखे जिनमे वह एक रहस्यमय तूफ़ान उमड़ता देख रही थी |

“तुम्हे मुझसे यह वादा करना होगा काल्जिता, कि तुम मेरे सिवाय किसी पर भी विश्वास नहीं करोगी | कोई कितना भी अकृत्रिम और वास्तविक लगे , तुम उस पर विश्वास नहीं करोगी | तुम्हे इस सत्य पर अडिग रहना होगा कि यहाँ पर केवल 2 चीजे वास्तविक है – एक तुम्हारी आत्मा और दूसरा मैं | बाकी सब एक संभावित जाल है |”

“मैं समझ गई , प्रभु |” काल्जिता चिंतित स्वर में बोली |

“तुम्हारी आत्मा और मेरे बीच केवल 12 कदमों की दूरी है | तुम्हारी आत्मा द्वारा मेरी तरफ लिया गया हर कदम माया को भ्रमजाल और भी सशक्त करने के लिए उकसायेगा | तुम्हारी आत्मा तुम्हारी देह में वापिस जाने का तीव्र आवेग महसूस करेगी | तुम्हे अपनी पूरी आत्मशक्ति उस आवेग को हारने में लगानी है | हर चीज को मात्र एक बुरा सपना मानकर आगे बढ़ते जाना है |” हनुमान जी सशक्ति से बोले |

जब हनुमान जी ने काल्जिता को पर्याप्त निर्देश दे दिए , उन्होंने अपनी आँखें बंद कर ली | कल्जिता को उनकी आँखों के बीच से श्वेत प्रकाश का एक बिंदु उभरता दिखाई दिया | बिंदु एक तरंग में बदलकर उसकी ओर बढ़ा | इससे पहले की वह आश्चर्यवश हांफती , उस ठंडी प्रकाश तरंग ने उसकी देह को जकड लिया | उसकी देह श्वेत प्रकाश में चमक रहा एक पुतला बन गई , कुछ भी करने में अक्षम , यहाँ तक कि पलके झपकाने में भी अक्षम |

जब हनुमान जी ने अपनी आँखे खोली, एक अज्ञात बल ने काल्जिता से कुछ बाहर खींचना शुरू कर दिया | काल्जिता की हिमीभूत देह से श्वेत प्रकाश की एक आकृति निकली और देह से एक कदम आगे बढ़ गई | यह उसकी आत्मा थी , उसकी देह से सफलतापूर्वक निकली आत्मा | देह जहाँ थी वही हिमीभूत रही और आत्मा आगे बढ़ी |

जब उसकी आत्मा ने एक कदम आगे बढाया , हनुमंडल में भयावनी चीजे घटित होनी शुरू हो गई | उसने एक ब्राह्मण को पत्थर पर कुल्हाड़ी पर धार लगाते देखा | एक बलि वेदी उस पत्थर के पास जड़ी जा रही थी | वह यह सब चीजे अपनी दृष्टि घुमाए बिना देख सकती थी | एक विचार कही से आ टपका , “क्या ये लोग मेरी देह को इस वेदी पर बलि करने वाले है? क्या यह दर्दनाक होगा ? लेकिन मैं , आत्मा , देह से अलग हूँ | तो मुझे इससे क्या फर्क पड़ता है कि मेरी देह के साथ क्या होता है?”

हालांकि यह विचार उसे कृत्रिम लग रहा था , इस विचार कि तुलना में कि उसे वापिस अपनी देह में जाकर देह को बचाना चाहिए | इन दो विचारों में लड़ाई छीड़ गई | एक तीसरे विचार ने आकर मध्यस्थता की – “यह भ्रम हो सकता है | ये लोग ऐसा घिनौना कार्य कैसे कर सकते हैं , वह भी हनुमान जी की उपस्थिति में | यह सत्य नहीं हो सकता | मुझे इन्तजार करना चाहिए |”

अनजाने बल ने उसकी आत्मा को एक कदम ओर आगे खींचा | जैसे ही उसने यह कदम बढाया , उसने एक बच्चे को हनुमंडल में प्रवेश करते देखा | यह उसका बच्चा था – असाधारण रूप से शांत | उसके हाथ उसकी देह के पीछे बंधे हुए थे | बलि वेदी की ओर जाते हुए उसने अपनी माँ की तरफ जिज्ञासा भरी नजर डाली | वह भौचक्की थी – “क्या ये मेरे बच्चे की बलि देने वाले हैं ?”

इस बार उसने किसी विपरीत अथवा सांत्वनाभरे विचार को आने की इजाजत नहीं दी | वह चिल्लाई – “नहीं ... रूको ... रूको... मैं वापिस लेती हूँ ... मुझे मोक्ष नहीं चाहिए ... रूको ..” लेकिन उसकी चिल्लाहट एक भ्रम थी | उसका चिल्लाने का यन्त्र , अर्थात उसकी देह तो उससे 2 कदम दूर थी , पूर्णतः स्थिर | वह यन्त्र के बिना कैसे चिल्ला सकती थी?

वह विपरीत बल , जो उसे वापिस देह की ओर खींच रहा था , को समर्पित हो गई | वह अपनी देह में वापिस जाकर चिल्लाना चाहती थी और अपने बच्चे को अपनी सुरक्षित बाहों में लाना चाहती थी |

हनुमान जी ने अभी आस नहीं छोड़ी थी | वे बोले – "हे काल्जिता, मैंने तुम्हे इस दू:स्वपन के बारे में पहले ही बताया था | इसकी शिकार मत हो जाओ | यह केवल एक बुरा सपना है | तुम्हारे बच्चे की बलि नहीं दी जा रही है | तुम यह सोच भी कैसे सकती हो कि मैं ऐसा होने दूंगा? मेरा विश्वास करो और आगे बढ़ो | यहाँ पर केवल मैं और तुम्हारी आत्मा वास्तविक है | बाकी सब भ्रम है – माया है |"

हनुमान जी के शब्द एक बच्चे की कर्णभेदी ऊँची चीत्कार में डूब गए – काल्जिता का बच्चा जिसे अभी अभी आभास हुआ था कि उसकी हत्या होने वाली है | एक ब्राह्मण एक बड़ी कुल्हाड़ी के साथ तैयार था और दो अन्य ब्राह्मण बच्चे की गर्दन को बलि वेदी में जकड रहे थे | हनुमान जी ने काल्जिता की जमी हुई देह में तनिक सी हलचल देखी – यह कुछ ऐसी हलचल थी जैसी किसी की भी देह में बुरा सपना देखते समय होती है |

"इसे अनदेखा कर दो – यह मात्र एक बुरा सपना है |" हनुमान जी दहाड़े – "क्या तुम्हे सुनाई पड़ रहा है ? वह एक भ्रम है | मैं तुमसे वादा करता हूँ , तुम्हारे बच्चे को कुछ नहीं होगा |"

बच्चे की चीत्कार काल्जिता की आत्मा को चीर रही थी | उसका हनुमान जी में विश्वास – एकमात्र चीज जो उसकी आत्मा को बांधे रख रही थी – भी तीव्रता से वाष्पित हो रहा था | वह हनुमान जी को खेद जताकर वापिस अपनी देह में जाना चाहती थी | वह ऐसा करने का बहाना ढूंढ रही थी | और उसे अंततः बहाना मिल गया | उसने सोचा – "प्रभु, अगर यह भ्रम है तो कृपा इसे बंद कर दीजिये , अभी |"

वह अपनी सोच को बोल नहीं पा रही थी लेकिन फिर भी वह सोच हनुमान जी तक पहुँच गई | उन्होंने उत्तर दिया – "यह मोक्ष यज्ञ है , काल्जिता | आपको एक चुनाव करना होगा – या तो मुझे चुनो या चुनो भ्रम |"

ब्राह्मण ने प्रहार करने के लिए कुल्हाड़ी उठा ली थी | वह चिल्लाई – "मैं अपने पुत्र को चुनती हूँ |"

इस बार उसकी चिल्लाहट उसकी देह से बाहर आई | सबने उसकी चीख सुनी | उसके आस पास की चीजें अचानक से बदल गई | अब वहां कोई बलि नहीं दी जा रही थी | ब्राह्मण शांति से श्लोक पढ़ रहे थे | बाबा मातंग नम आँखों से लेकिन सचेत बैठे थे | उसे आभास हो गया कि वह सब मात्र एक बुरा सपना था | वह रो पड़ी – "मैंने आपका विश्वास तोडा है , प्रभु | मुझे क्षमा कर दीजिये | मैंने आपका विश्वास तोडा है |"

हनुमान जी ने गहरी सांस ली और औपचारिक आवाज में बोले – "बाबा मातंग , यज्ञ की प्रक्रिया जारी रखी जाए |"

बाबा उर्वा की तरफ एकटक नजर गडाए धीरे धीरे खड़े हुए | उनके रूखे चेहरे से एक आंसू लुढ़क आया और उन्होंने यजमान का स्थान ग्रहण किया – हनुमान जी से ठीक 12 कदम दूर |

युवा मातंगों में उर्वा ही अकेला था जिसने अंदाजा लगा लिया था कि बाबा की आत्मा प्रस्थान करने वाली थी | वह जोर जोर से चिल्ला रहा था लेकिन वह यज्ञ प्रक्रिया से रोधित था | उसकी चीख किसी तक भी नहीं पहुँच रही थी |

हनुमान जी ने आँखें बंद की और अपनी पूर्ण दिव्य शक्ति से बाबा की आत्मा को देह से बाहर खींचा | श्वेत प्रकाश की एक आकृति ने बाबा की देह से बाहर कदम रखा | माया ने भी अपना काम किया | जैसे जैसे बाबा की आत्मा कदम आगे रख रही थी , उनका दु:स्वपन गहराता गया | उन्होंने उर्वा की बलि चढ़ते देखी और मातंग परंपरा का सर्वनाश होते देखा | उन्होंने वो सब देखा जिसका भय उन्हें था | लेकिन उनकी हनुमान जी में श्रद्धा ने दु:स्वपन से विजय पा ली | उनकी आत्मा ने हनुमान जी की ओर 12 कदम पूर्ण किये और उड़ गयी | एक श्वेत प्रकाश की आकृति को हनुमंडल से बाहर जाते देखा गया |

ठीक उसी समय समरूप श्वेत आकृति ने हनुमंडल में प्रवेश किया | वह विष्णुलोक से उतरी एक 'प्रवासी आत्मा' थी जो बाबा की आत्मा का स्थान लेने आई थी | उस आत्मा ने बाबा की स्तंभित देह में प्रवेश किया और बाबा पुनः जीवित हो गए |

मोक्ष यज्ञ समाप्त हो गया | बाबा मातंग की आत्मा को मोक्ष प्राप्त हो गया लेकिन जैसा उर्वा को डर था वैसा नहीं हुआ अर्थात उनकी देह मृत्यु को प्राप्त नहीं हुई | इसकी बजाए विष्णुलोक की एक 'प्रवासी आत्मा' ने बाबा मातंग के रूप में जीवन का पुनः आरम्भ कर दिया | उर्वा को छोड़कर किसी अन्य युवा मातंग का इस पर ध्यान भी नहीं गया |

बाबा मातंग अर्पण वेदी के पास अपने सुनिश्चित स्थान पर आ गए | यजमान काल्जिता अपने निर्धारित स्थान पर सिसकियाँ भर रही थी | हनुमान जी ने एक पल उसकी ओर देखा और फिर सभी को संबोधित करते हुए बोले – "हे मातांगो , आप सबको काल्जिता के प्रति आभारी होना चाहिए | उसके साहस से आप सभी को कुछ सीखने को मिला है – कि मोक्ष का कोई लघुपथ नहीं है | इसलिए आपको पूर्ण इमानदारी से ब्रह्माज्ञान के रास्ते पर बढ़ते रहना चाहिए , और लघुपथ के विचारों से अपना ध्यान भंग नहीं करना चाहिए |"

काल्जिता को हनुमान जी के इन शब्दों से सांत्वना मिली | लेकिन जब वह बोली तो उसकी आवाज में अब भी अपराध बोध था | वह बोली – "हे प्रभु, मुझे माया ने जकड लिया था | मैंने आप पर विश्वास नहीं किया | मैं शर्मिंदा हूँ कि मेरी आपमें श्रद्धा इतनी कम है | मैं शर्मिंदा हूँ , प्रभु |"

वह फिर सिसकने लगी | हनुमान जी ने सान्त्वनापूर्वक कहा – "हे काल्जिता , मानव ही नहीं , सभी प्राणियों का अपनी संतानों के प्रति सबसे शक्तिशाली जुड़ाव होता है | जब कोई अपने बच्चे को अपने सामने पीड़ा में देखता है तो प्राकृतिक रूप से प्रतिक्रिया करता है , बाकी सब श्रद्धा विश्वास उड़ जाता है | तुम कोई अपवाद नहीं थी | केवल ब्रह्मज्ञानी आत्माएं ही मोक्ष यज्ञ से मोक्ष प्राप्त कर पाती है | हालांकि ऋषि विश्वामित्र ने मोक्ष यज्ञ की परिकल्पना इन आशाओं से की थी कि यह नीचले स्तर की आत्माओं को तत्काल मोक्ष देने में सहायक होगा |"

"प्रभु , क्या ऋषि विश्वामित्र ने त्रिशंकु प्रयोग की असफलता के पश्चात् भी अपने प्रयोग जारी रखे?" उर्मी नामक एक मातंग लड़की ने आश्चर्यवश प्रश्न किया |

"विश्वामित्र" हनुमान जी की आवाज में अनायास ही प्रशंसा के भाव आ गए | वे मुस्कुराते हुए बोले – "विश्वामित्र ऋषि तुरंत मानवता की सभी पीडाओं का अंत करना चाहते थे | वे सबको ऋषि श्रेणी में लाना चाहते थे | त्रिशंकु प्रयोग की असफलता के पश्चात् वे कई साल तक अध्यात्म के विकास के तरीके ढूंढते रहे, और जब उन्होंने एक तरीका ढूँढा तो उन्होंने वह तरीका आजमाने के लिए एक मनुष्य भी ढूंढ लिया – राजा अम्बरिश उनका नाम था , वे सत्यव्रता अर्थात त्रिशंकु के उतराधिकारी थे |

"यह प्रयोग शुरू करने से पहले उन्होंने अम्बरिश को इस प्रयोग के लिए मानसिक, बोद्धिक और आध्यात्मिक तौर पर तैयार करने हेतु काफी समय बिताया | अंतत प्रयोग की तिथि निर्धारित की गई ; अर्थात सबसे पहले मोक्ष यज्ञ की तिथि |

“यज्ञ से पहले एक आखिरी सत्संग के लिए विश्वामित्र जी ने अम्बरीश को अपने आश्रम में बुलाया | सत्संग में उन्होंने समझाया – “हे अम्बरीश, मोक्ष के बारे में मानव मन में एक स्वाभाविक विचार यह आता है – ‘नश्वर संसार से मेरी आत्मा के चले जाने के बाद मेरी देह का क्या होगा? मेरे परिवार और प्रियजनों का क्या होगा?’ मैं तुम्हे विश्वास दिलाता हूँ कि तुम्हारी मृत्यु नहीं होगी | एक ‘प्रवासी आत्मा’ आकर तुम्हारी देह को धारण कर लेगी | आपके प्रियजन आपके स्वभाव में कोई परिवर्तन नहीं देखेंगे | सब कुछ वैसे ही चलेगा जैसे चल रहा है |”

“जब अम्बरीश यज्ञ के बारे में आत्म-विश्वास और दृढ संकल्प से भरे थे तब ऋषि विश्वामित्र ने अपने प्रयोग की सफलता के आसार बढाने के लिए एक चाल चली | उन्होंने शांतिपूर्वक पुछा – “अम्बरीश , अगर जरूरत पड़े तो मोक्ष के लिए तुम क्या कुर्बान कर सकते हो?”

“अम्बरीश ने उत्तर दिया – “मेरी देह मेरी सबसे बड़ी सम्पति है , गुरुदेव | मैं अपनी देह कुर्बान करने के लिए तैयार हूँ , और क्या कुर्बान कर सकता हूँ ...”

“तुम्हारा पुत्र?” ऋषि विश्वामित्र तुरंत बोले – “तुम्हारा एकमात्र पुत्र रोहिताश्व | क्या तुम्हे वह अपने से भी अधिक प्रिये नहीं है?”

“अम्बरीश का चेहरा फीका पड़ गया | उसने अनजाने में ही ऋषि विश्वामित्र को घृणापूर्ण दृष्टि से घूरा | ऋषि विश्वामित्र ने इस पर ध्यान नहीं दिया और उदासीन स्वर में बोले – “तुम्हारे पुत्र की कुर्बानी की आवश्यकता पड़ सकती है | ख्याल रखना कि वह यज्ञ के दिन यज्ञ स्थल पर उपस्थित रहे |”

“अम्बरीश ने एक भी शब्द नहीं बोला | जब तक सत्संग समाप्त नहीं हुआ वह इशारों में ही संवाद करता रहा , और सत्संग समाप्त होते ही अपने महल की ओर तेजी कूच कर गया | यज्ञ को मात्र 4 दिन बाकी थे | उसने रोहिताश्व को अपने भरोसेमंद सिपाहियों के साथ अज्ञात स्थल पर भेज दिया | उसने सख्त आदेश दिया – “संसार में किसी को भी पता नहीं चलना चाहिए कि रोहित कहाँ है | यज्ञ के दिन रोहित अपने राज्य के आस पास भी नहीं होना चाहिए | अगर तुम्हे मेरे नाम से भी कोई पत्र प्राप्त हो तो भी उस पर गौर मत करना | जो भी रोहित को यज्ञ स्थल के पास लाने की कोशिश करे , उसे शत्रु समझा जाए , चाहे फिर वो मैं ही क्यों न हूँ |”

“यही तो ऋषि विश्वामित्र चाहते थे |अंतत: यज्ञ का दिन आ गया | ऋषि वशिष्ट अम्बरीश के पारिवारिक गुरु होने के नाते उपस्थित थे | असल में विश्वामित्र ऋषि वशिष्ठ के प्रोत्साहन से ही इस प्रयोग को अंजाम दे रहे थे |

“यज्ञ के शुरू में ऋषि विश्वामित्र ने यजमान अम्बरीश को कहा – “हे यजमान , तुम बुरे से बुरे सपने देखने वाले हो | तुम्हे अपने प्रियजनों के साथ कुछ भी होता दिखाई दे , उसको बुरा सपना समझकर अनदेखा कर देना | कुछ भी हो जाए , पीछे मत हटना | मेरी तरफ बढ़ते जाना और 12 कदम की यह दूरी तय करना | केवल मुझ पर विश्वास करना , और किसी पर नहीं | ठीक है?”

“ठीक है, ऋषिवर |” अम्बरीश ने चिंतापूर्ण स्वर में कहा |

“ऋषि विश्वामित्र ने गहराई से उसकी आँखों में देखते हुए पूछा – “क्या तुम मुझे वचन देते हो?”

“अम्बरीष ने उच्च स्वर में उत्तर दिया – “हाँ गुरदेव , मैं आपको वचन देता हूँ कि केवल आप पर विश्वास करूँगा | और किसी पर भी नहीं |”

“जैसे ही यज्ञ क्रिया आगे बढ़ी , अम्बरीश की आत्मा उसकी देह से बाहर आ गई | माया की जकड शक्तिशाली हो गई | उसने देखा कि उसका पुत्र रोहित यज्ञ स्थल में था ; उसको बलि चढाने की तैयारियां चल रही थी | विश्वामित्र ने सोचा कि उनकी चाल यहाँ काम आएगी | वे बोले – “वह तुम्हारा

पुत्र नहीं है , अम्बरीश | यह मात्र भ्रम है | तुम अच्छे से जानते हो कि तुम्हारा पुत्र यहाँ नहीं है |"

"अम्बरीश को विश्वास था कि उसका पुत्र उसके राज्य से दूर कही सुरक्षित है , उसके भरोसेमंद सैनिकों की निगरानी में | उसे विश्वास हो गया कि जो कुछ वह यज्ञशाला में देख रहा था वह भ्रम था |

"जैसे ही उसकी आत्मा ने एक और कदम आगे बढाया , माया ने और भी शक्ति लगा दी | अब अम्बरीश ने देखा कि उसके पुत्र की गर्दन बलि की वेदी पर जकड़ी हुई थी | धुएं सी काली सोच कही से आ गई – "शायद ऋषि विश्वामित्र ने मेरे पुत्र के ठिकाने का पता लगा लिया हो और उसे यहाँ ले आये हों ?"

"ऋषि विश्वामित्र उसके संदेहों के धुएं को ढकने की कोशिश करते हुए बोले – "हे अम्बरीश, जो तुम देख रहे हो वह वास्तविक नहीं है | यज्ञशाला में कोई बलि नहीं दी जा रही है | तुम्हारा पुत्र यहाँ है ही नहीं | अगर बलि की आवश्यकता पड़ती है तो ऋषि अजग्रता का पुत्र सुनहशेप यहाँ है | हमें तुम्हारे पुत्र की बलि की आवश्यकता नहीं है |

"ऋषि अजग्रता यज्ञशाला में इसलिए उपस्थित थे कि अगर अम्बरीश की आत्मा मोक्ष प्राप्त न कर पाए तो वे स्वेच्छा से मरण लोक त्याग करके यज्ञ का समापन कर दें | उनका पुत्र सुनहशेप भी उपस्थित था , बलि के लिए नहीं , बल्कि अम्बरीश को यह विश्वास दिलाने के लिए कि उसके पुत्र रोहित के स्थान पर उसको बलि के लिए चुन लिया गया है |

"माया का प्रभाव इतना अधिक था कि अम्बरीश ने इसके सामने घुटने टेक दिए | उसकी आत्मा पुनः उसकी देह में आ गई | बुरा सपना समाप्त हो गया | उसे आभास हो गया कि यज्ञ में कोई बलि नहीं दी जा रही थी | यह मात्र एक भ्रम था | प्रयोग असफल हो गया ; ऋषि विश्वामित्र निराश थे |

"यह है भ्रम की शक्ति , हे मातंगो : जब आप इसके अन्दर होते हैं तो आपको पूर्ण विश्वास होता है कि यह भ्रम नहीं वास्तविकता है | केवल ब्रह्मज्ञानी आत्माएं इस भ्रम को पहचान सकती है | इसलिए मोक्ष यज्ञ केवल ब्रह्मज्ञानी आत्माओं के लिए सफल होता है , और उनको वैसे भी मोक्ष के लिए मोक्ष यज्ञ की आवश्यकता नहीं होती |

"यज्ञ समाप्त होने के पश्चात् ऋषि विश्वामित्र निराश होकर यज्ञ स्थल से चले गए | राजा अम्बरीश अपने पारिवारिक गुरु ऋषि वशिष्ट के चरणों में गिर गया और भर्राई हुई आवाज में बोला – "गुरुदेव , मैंने मोक्ष का अवसर गवां दिया है | मुझे जीवन समाप्त करने की इच्छा हो रही है ताकि मैं अगले जन्म में मोक्ष यज्ञ सफल करने का प्रयास कर सकूं |"

""तुमने केवल लघुमार्ग का विकल्प गंवाया है , अम्बरीश|" ऋषि वशिष्ट बोले – "तुम इसलिए असफल हुए क्योंकि तुमने विश्वामित्र को दिया अपना वचन नहीं निभाया | अगर तुम अपने वचन निभाने की शपथ लो तो तुम्हारा जीवन ही एक यज्ञ बन जाएगा | खड़े हो जाओ , जो भूतकाल में हुआ उसे भूल जाओ और अपने आपको माफ़ करो | स्वयं को अपराध बोध से मुक्त करो और अभी से एक नए पुरुष बन जाओ – वह पुरुष जो अपने वचन निभाता है फिर चाहे कुछ भी हो जाए | आज से मैं तुम्हे एक नई पहचान देता हूँ | आज और अभी से तुम हरीश के नाम से जाने जाओगे – राजा हरीश चन्द्र | आज से तुम्हारा पूरा जीवन मोक्ष यज्ञ बन जाएगा | चाहे तुम्हारा पूरा जीवन एक भयावना सपना बन जाए , कभी अपना वचन मत तोडना – फिर तुम्हारा जीवन सफल होगा और तुम्हे मोक्ष प्राप्त होगा |"

"एक बार राजा हरीश एक जंगल से गुजर रहे थे कि उन्हें किसी औरत की चीख पुकार सुनाई दी | उन्होंने उस आवाज का पीछा किया तो पता चला कि वह निषादों द्वारा बिछाया जाल था जिसमे वे फंस गए | निषादों ने उनका अपहरण डकैती के लिए किया था लेकिन जब उन्हें पता चला कि वे राजा हैं , उन्होंने उनकी हत्या करने का निर्णय लिया | उन्हें डर था कि अगर वे उनको जाने देते तो वे वापिस अपनी सेना के साथ आते और उनका सर्वनाश कर देते |

ऋषि विश्वामित्र ने उन निषादों से समझौता करके राजा को छुड़ाया | राजा हरीश उस दिन ऋषि विश्वामित्र के आश्रम में ठहरे | ऋषि ने उनको निषादों के जाल का पता लगाने का ज्ञान दिया | वहां से प्रस्थान करते समय राजा हरीश बोले – "ऋषिवर , आपने न केवल मेरी जान बचाई , बल्कि मुझे निषादों के जाल के बारे में बहुमूल्य ज्ञान भी दिया | मैं आपको दक्षिणा देने की इच्छा रखता हूँ |"

"ऋषि विश्वामित्र जानते थे कि राजा हरीश ने अपने वचन निभाने का प्रण ले रखा है | उन्हें वहां पर हरीश की आत्मा को शीघ्र मोक्ष दिलाने का अवसर नजर आया | वे प्रसन्नतापूर्वक बोले – "हे राजन , मैंने आपकी जान कुछ बदले में पाने के लिए नहीं बचाई | लेकिन जो ज्ञान मैंने आपको दिया है , उसकी दक्षिणा मैं प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करूँगा | क्या आप मुझे वचन देते हैं कि मैं जो भी मांगू , आप मुझे देंगे?"

""हाँ ऋषिवर , मैं वचन देता हूँ |" हरीश ने बेझिझक कहा |

"ऋषि विश्वामित्र आवाज में रूखापन लाकर बोले – "मैं मांगता हूँ कि आप हर अमावस्या को अपनी सभी संपतियां मुझे देंगे और नई सम्पति अर्जित करने के लिए कठिन परिश्रम करोगे ताकि हर अमावस्या को आपके पास कुछ दान करने के लिए हो | मैं हर अमावस्या को आपसे अपनी दक्षिणा मांगने आऊंगा |"

"वचन के पक्के राजा हरीश ने अमावस्या को अपना राज्य और सभी संपतियां ऋषि विश्वामित्र को दे दी | एक राजा के लिए अचानक भिखारी बन जाना बहुत पीड़ादायक था | उन्होंने यह सोचकर इस पीड़ा को सहन किया कि यह मात्र बुरा स्वपन है , गुजर जाएगा |

"राजा हरीश अपनी पत्नी और बच्चे के साथ काशी को पलायन कर गए | वहां पर उन्होंने एक कुम्हार के यहाँ कुछ काम शुरू किया ही था कि अगली अमावस्या नजदीक आ गई | ऋषि विश्वामित्र को देने के लिए वे कोई सम्पति अर्जित नहीं कर पाए थे | आखिरी क्षण में तुरंत सोना पाने के लिए उन्होंने अपने आपको एक चंडाल के यहाँ दास के रूप में बेच दिया , और उसके साथ शवदाहग्रह में कार्य करने लगे | एक पूर्व राजा का किसी निषाद के दासत्व में कार्य करना अत्यंत पीड़ादायक था लेकिन उन्होंने यह सोचकर इस पीड़ा को सहन किया कि यह मात्र बुरा स्वपन है , गुजर जाएगा |

"अमावस्या को ऋषि विश्वामित्र अपनी दक्षिणा लेने आये और वचन के अनुसार उन्होंने चंडाल से प्राप्त किया सारा धन ऋषि को दे दिया |

"चंडाल ने उनको अग्रिम तौर पर मेहनताना दे दिया था | अब उनको वहां काम करने के लिए कुछ नहीं मिलने वाला था | अगली अमावस्या एक महीना दूर थी किन्तु हरीश को अभी से अगली दक्षिणा की चिंता सताए जा रही थी | उन्होंने सब कुछ प्रभु पर छोड़ दिया और शवदाहगृह में कड़ी मेहनत से कार्य करने लगे |

"लेकिन कोई चमत्कार नहीं हुआ | अगली अमावस्या नजदीक आ गई थी और उसके पास ऋषि विश्वामित्र को देने के लिए कुछ नहीं था | उधर उनकी पत्नी एक कुम्हार के यहाँ काम कर रही थी जहाँ मुश्किल से उसके और उसके बच्चे के खाने का इंतजाम हो पाता था | शीघ्र धन अर्जन करने के लिए उसने भी एक धनी निषाद के यहाँ दासत्व स्वीकार कर लिया | जब वह उस दासत्व से अर्जित धन को अपने पति को देने शवदाहगृह में आई , राजा हरीश का हृदय थम गया , पैरों से चेतना गायब हो गई , आँखे झपकना बंद हो गई , और वे अपनी पत्नी को एकटक देखते रहे | वह धन उनके पास रखकर चली गई | 'मेरी पत्नी और दास !' इस कटु वास्तविकता ने राजा हरीश को मानसिक संतुलन खोने के मुहाने पर ला दिया था | उन्होंने यह सोचकर इस पीड़ा को सहन किया कि यह मात्र बुरा स्वपन है , गुजर जाएगा |

"अमावस्या आई , ऋषि विश्वामित्र भी आये और हरीश ने अपनी पत्नी के दासत्व से अर्जित धन भी उनको सौंप दिया | विश्वामित्र का ध्यान इस बात पर गया कि हरीश की आत्मा देह से अलग हो गई थी | उनकी आत्मा उनकी देह और बाहरी संसार में हो रही घटनाओं की दूरस्थ दर्शक बन गई थी |

“उस अमावस्या के 6 दिन बाद हरीश ने अपनी पत्नी को शमशान घाट के द्वार पर देखा – उसके गोद में थी उनके मृत बेटे की लाश | एक साधारण पिता अपने पुत्र की मृत देह देखकर टूट जाता लेकिन हरीश नहीं टूटे | वे जीवन को ऐसे ले रहे थे जैसे वह कोई भयावह सपना था | वे सोच रहे थे कि वे किसी दु: स्वपन में हैं और वे एक दिन उस स्वपन से उठेंगे और सब कुछ ठीक मिलेगा |

“अपने पुत्र के दाह संस्कार के शुल्क के रूप में देने के लिए न हरीश के पास कुछ था न उनकी पत्नी के पास | निष्ठुर चंडाल ने उनकी पत्नी को शव अन्दर लाने की भी इजाजत नहीं दी | वह द्वार के बाहर बैठी रही , अपने पुत्र के शव को सामने रखे हुए | पूरा दिन गुजर गया और फिर भयावह रात भी | अगर यह सब एक भ्रम था तो निश्चय ही माया द्वारा निर्मित सबसे पीड़ादायक भ्रम था यह |

“माया हरीश चन्द्र को वचन तोड़ने के लिए मजबूर नहीं कर सकी | सुबह होते ही माया ने पराजय स्वीकार कर ली | हरीश की आत्मा को मोक्ष मिल गया | एक ‘प्रवासी आत्मा’ विष्णुलोक से आई और हरीश की देह को धारण कर लिया |

“हरीश की देह में हुए इस आत्मा के फेर बदल का किसी को भान नहीं हुआ | वे सचमुच एक प्रसन्नताभरे दिवस में अपने महल में जागे | उनका पुत्र रोहिताश्व उनके बगल में शांति से सोया हुआ था , और उनकी पत्नी भी | उन्होंने अपने कक्ष में टहलते हुए ईश्वर को धन्यवाद दिया कि बुरा स्वपन समाप्त हो गया था |”

हनुमान जी ने अपना व्याख्यान समाप्त किया और चरण पूजा सभा उस दिन के लिए स्थगित कर दी गई |

हनुमान जी की लीलाओं का यह अध्याय यही समाप्त होता है |

Like You and 20K others like this.

--- सीधे अर्पण पर जाएँ ---

आत्मा पर भ्रम की परतें

Himanshu, अध्याय पढने के बाद यह पर्यवेक्षण करना आवश्यक है कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं | अगर आप कुछ ऐसा महसूस कर रहे हैं - "वाह! मैंने कुछ नया पाया |" अथवा "वाह, मैंने कुछ नया सीखा |" अथवा "मेरी अपने प्रभु ले प्रति भक्ति ओर भी बढ़ गई|" इत्यादि तो आप अपने प्रभु की ओर एक कदम भी नहीं बढ़े हैं | आप उतनी ही दूरी पर अटके हुए हैं |

अगर अध्याय पढने के बाद आप कुछ ऐसे महसूस कर रहे हैं जैसे आपके अन्दर से कुछ बाहर निकलकर गिर पड़ा हो और आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हों तो आप अपने प्रभु की तरफ कम से कम एक कदम बढ़ चुके हैं |"

आपकी आत्मा एक आईने की तरह है जिसके ऊपर इस बाहरी संसार के कारण धुल चढ़ गई है | अगर अध्याय पढने के बाद आप ऐसा महसूस कर रहे हैं कि आपने कुछ नया पा लिया है तो उसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा पर एक और परत चढ़ा ली है | आप प्रभु के साक्षात् दर्शन तभी कर सकते हैं जब आप ये परतें हटायें | अतः अगर आप इस समय आत्मा से हल्का महसूस नहीं कर रहे हैं तो आप कुछ समय बाद फिर आकर यह अध्याय पढ़िए |

अगर आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हैं तो इसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा के आईने से कम से कम एक धुल की परत साफ़ कर ली है | अब आपका अगला कदम होना चाहिए कि यह धुल की परत वहां पुनः न बैठे | (जब आप अपने घर में कोई आइना कपडे से साफ़ करते हैं तो आप उस कपडे को अन्दर यूँ ही नहीं रख देते , आप उसे बाहर झड़काकर आते हैं)

धुल की परत फिर से आत्मा पर न बैठे, इसके लिए प्रभु को अर्पण किया जाता है | अर्पण फूलो , फलो या किसी भी ऐसी वस्तु का हो सकता है जो आपसे जुडी हुई हो | मातंग संस्कृति में आत्मा से हल्का महसूस करने के 108 घंटे के अन्दर अन्दर अर्पण करने का विधान है | आप बाजार से भी फल का अर्पण खरीद सकते हैं क्योंकि आपका पैसा भी आपसे जुडा हुआ है |

भगवान् विष्णु का अंतिम अवतार

जब भगवान् राम ने अपनी सांसारिक लीलाएं पूरी की और विष्णु लोक में चले गए तब हनुमान जी भी अयोध्या से वापिस आ गए और जंगलों में रहने लगे | वे अपने अदृश्य रूप में भक्तों की सहायता करते रहे | लेकिन जब महाभारत काल में भगवान् विष्णु कृष्ण के रूप में धरती पर आये तब हनुमान जी भी जंगलों से बाहर आये और पांड्वो की सहायता की (उन्होंने पूरे युद्ध में अर्जुन के रथ की रक्षा की)

महाभारत युद्ध के पश्चात् हनुमान जी फिर जंगल में चले गए | उन्होंने अदृश्य रूप में भक्तों की रक्षा करना जारी रखा | लेकिन दृश्य रूप में केवल ऋषि मुनि ही उन्हें देख सकते थे वो भी जंगलों में | उदाहरण के तौर पर , मातंगो को जंगल में हर 41 साल बाद उनके आतिथ्य का सुख प्राप्त होता था |

अब हनुमान जी ने अपनी लीलाए करके एक बार फिर से पूरे संसार के सामने अपने दृश्य स्वरुप का दर्शन कराया है | लेकिन वे ऐसा तभी करते हैं जब भगवान् विष्णु किसी अवतार में धरती पर मौजूद हों | क्या भगवान् विष्णु ने कल्कि के रूप में अवतार ले लिया है ? या अवतार लेने वाले हैं ? इसके कुछ हिंट हनुमान जी ने अपनी लीलाओं में दिए हैं | शायद आगे आने वाले अध्यायों में यह पूर्णतः सपष्ट हो जाएगा |

तब तक श्री हनुमान जी के निर्देशानुसार साक्षात् हनुमान पूजा अनवरत जारी है | अगर आप अपना कोई प्रश्न , संदेह अथवा प्रार्थना साक्षात् हनुमान पूजा में सम्मिलित करवाना चाहते हैं तो सेतु के माध्यम से कर सकते हैं | (write them in "My Experiences" section.)

Himanshu, आप साक्षात् हनुमान पूजा में अर्पण भेजकर यजमान के रूप में भी हिस्सा ले सकते हैं | अर्पण हनुमान जी की लीलाओं का अध्याय पढ़ने के 108 घंटे के अन्दर होता हैं |

Your Offerings so far at this chapter: Fruits worth

Rs. 0

Offerings have been closed for you on this chapter because 108 hours have passed since you first read this chapter.You did not give offerings in that time period. Check next chapter.

Your Successful transactions on this chapter :

Your successful attempts of Arpanam on this chapter are listed individually below :

Attempt ID	amount	Status	Time
534941	Rs. 108	Successful	15/11/2016 - 11:14

Your Incomplete/Failed transactions on this chapter :

You don't have any incomplete or failed transaction on this chapter.

« Previous Next Chapter »

भक्तिमाला मंत्र अनुभव कृतज्ञता प्राचीर विन्यास

Home मातंग इतिहास Terms of Use Privacy Policy Reach Us तकनीकी सहायता Setuu © 2016 Read in English

Gratitude Wall Devotee Queries Experiences and Prayers Hanuman Leelas

Print